अस्मिता का खोज

कहना चाहती हूँ मैं.....
लड़खड़ी रही है मगर...
महसूस करती हूँ मैं.....
भीतर से वह आवाज़..!

तुम फेंक सकते हो...
इस गंदगी में मुझे...
तुम परेशान करते हो...
क्या मेरी पुनरुत्थान..?

तुम लिख सकते हो.....
इतिहास में मुझे.....
कड़वे झूठ के साथ...
मुड़ झूठ के साथ...!

उस कछुए को देखो...
छुपाता है पपड़ी को...
जो दुश्मनों से शरीर...
क्या मैं कछुआ बनूँ...?

क्या तुम चाहते हो...
मेरी अतंपतन....
खींचता है कचड़ा में...
मुरझाया आखें....!

रात की अंधेरे को तोड़ो...
इक स्पष्ट दिन में...
मैं उड़ूँगा, फिर भी उड़ूँगा...
फीनिक्स चिड़िया जैसे..!
(Pheonix)

खड़ा नहीं होता....
हृदय की धड़कन....
गायब नहीं होता....
मन का इंद्रधनुष...!